18-6-67 ओम शान्तिः प्रातः क्लास

बाप बैठ बच्चों को समझाते है। अक्सर करके मनुष्य शान्तिः को बहुत पसन्द करते है। अगर कोई घर मे खिटपिट होती है तो अशान्ति रहती है। अशान्त होने से दुःख भासता है। शान्तिः से सुख भासता है। यहां तुम बच्चे बैठ हो तुमको सच्ची शान्तिः है। तुमको कहा गया है कि बाप को याद करो। अपने को आत्मा समझो। आत्मा मे जो आधा कल्प से अशान्तिः है वो निकालनी है। शान्ति के सागर के बाप को याद करने पर तुमको शान्ति का वर्सा मिल रहा है। यह भी तुम जानते हो कि शान्तिः की दुनियां और अशान्ति कीदुनियां और-2 है। आसुरी दुनियां, ईश्वरिय दुनियां, सतयुग, कलियुग, किनको कहा जाता है यह कोई मनुष्य मात्र नही जानते है। तो जनावर बुधी ठहरे नां। तुम कहेंगे कि हम भी नही जानते थे2 पैसे वालें को पैसाजीवन वाला कहा जाता है। गरीब और शाहुकार समझ तो सकते है नां। वैस ही तुम भी यह समझ सक्ते हो कि ईश्वरिय औलाद और आसुरी औलाद है। अभी तुम मीठे बच्चे समझते हो कि हम ईश्वरिय सन्तान है। यह तो पक्का निश्चय है नां। जानते हो कि आसुरी सम्प्रदाय अथवा औलादकिसको कहा जाता है। यह सिर्फ तुम ब्राह्मण ही समझते हो। समझते हुये भी भूल जाते हो। तुम ब्राह्मण ही समझ सकते हो कि हम ब्राह्मण और ईश्वरिय सन्तान है। हर समय वो ही खुशी रहनी चाहिये। बहुत थोडे है जो यथार्थ रीती से समझते है। सतयुग मे है दैवी सम्प्रदाय। कलयुग मे है आसुरी सम्प्रदाय। पुरुषोतम संगम युग पर आसुरी सम्प्रदाय बदली होती है। अभी हम शिव बाबा की औलाद बने है। बीच मे भूल गये थे। अभी फिर इस समय जाना है। कि हम शिव बाबा की सन्तान है। वहां सतयुग मे होते है तो अपने को ईश्वरिय औलाद नहीकहलाते हैं। वो है दैवी औलाद। उनके पहले हम आसुरी औलाद थे। अभी ईश्वरिय औलाद बने है। हम ब्राह्मण ब्र, कु, कु, है। रचता है एक बाप की। तुम सब भाई बहने हो। और ईश्वरिय औलाद हो। तुम जानते हो हमको बाबा से राज्य मिल रहा है। भविष्य मे जाकर हम दैवी स्वराज्य पावेंगे। बेरावर सतयुग है सुख का धाम। कलयुग है दुःख का धाम। तुम संगम युगीहब्राह्मण ही जानते हो। वो है कलयुगी। कलयुगी घर मे कलयुगी दुनियां मैं है। यह भी तुम देख रहे हो कि एक ही घर मे बाप कललयुगी है तो बच्चा सतयुगी बन रहा है। क्योकि ईश्वरिय औलाद बना है। आत्मा ही ईश्वरिय औलाद है। यूं तो हम सब आत्माओं का बाप परमात्मा है। यह भी जानते हो बाबा स्वर्ग की स्थापना करते है। वो रचता है नां। नर्क का क्रियेटर तो नही है:तो उनको कौन नही याद करेंगे। तुम मीठे-2 बच्चे जानते हो बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे है। वो हमारा बहुत मीठा बाप है। हमको 21जन्मों के लिये स्वर्गवासी बनाते है। इससे मीठी वस्तु कोई होती नही है। यह समझ रखनी चाहिये कि हम ईश्वरिय औलाद है। तो हमोरदमे कोई ऐसा आसुरी अवगुण नही होना चाहिये। अपनी ही उन्नती करनी है। समय बाकी थोडा है। उसमे गफलत नही करनी चाहिये। भूल नही जाना है। देखते हो बाप सम्मुख बैठा है। जिनकी ही हम औलादहे। हम ईश्वर बाप सेपढ़ रहे है। दैवी औलाद बनने लिये तो कितनी नां खुशी होनी चाहिये। आधा समय हम आसुरी सम्पदास रहे। बहुत दुख उठाये। विषय सागर मे गोता खाया। जहर पिया, जहर पीने से दु, ख अमृत पीने पर सुख होता है। अभी तुम जानते हो हम तो ईश्वरिय औलाद है। ईश्वर बाप आया है। बच्चो को ले जाने लिये। बाबा सिर्फ कहते है कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। बाप आया ही सबको ले जाने लिये। जितना याद करेंगे याद करेंगे उतने विकर्म विनाश होगें। बाप को ऐसे याद करो जैसे कि कन्या की सगाई होती है याद बिलकुल ऐसे कि छप जाती है। बच्चा पैदा हुआ और याद छप जाती है। याद तो स्वर्ग मे भी छप जाती नर्क मे भी छप जाती है। बच्चा कहेगा कि यह हमारा बाप है। अबयह तो है बेहद का बाप। जिससे ही स्वर्ग का वर्सा मिलता है। तो उनकी याद छप जानी चाहिये नां। जैसे अज्ञान काल मे याद छप जाती है। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना है। बाबा से हम भविष्य 21जन्मो का फिर से वर्सा ले रहे है।

बुधी मे वर्सा ही याद है। आप भी जानते हो कि मरना तो सबको ही है। एक भी रहने वाला नही है।
जो भी डिटैस्ट थे और है सब चले जावेंगे। यह सिर्फ तुम ब्राहमण ही जानते हो। यह पुरानी दुनियां
गई की नई। इसके जाने के पहले पुरा पुरुषार्थ करना है। जब कि ईश्वरिय औलाद है तो अथाह खुशी
हानी चाहिये। बाप कहते रहते है के बच्चे अपनी ही खातिर अपना जीवन तो हीरे जैसा बनाओ। वो है
डीटी वर्ल्ड। यह है डेवल वर्ल्ड। सतुयग मे कितना अथाहसुख रहता है। वो बाप ही देते है।
क्या तुम बाप के पास आते हो। यहां बैठ तो नही जाओगे। ऐस तो नही कि सब इकठे ही रहेंगे। क्यो
कि बेहद बच्चे है। वो आसुरी औलाद फिर 5,50,60 करके 100 होंगे। बिनिताम को 500 रानियां
थी। फिर बच्चे भी तो सभी इतने होंगे नां। यहां तो तुम थोडे आते हो। और बहुत ही उंमग से आते हो।
हम जाते है बेहद के बाप के पास। हम ईश्वरिय औलाद है। गाड फादर के बच्चे है तो हम क्यो नही
सारी
स्वर्ग मे जाने चाहिये थे। गाड फादर है तो स्वर्ग को रचता है नां। अब तुम्हारी बुधी मे वर्ल्ड की
हिस्ट्री जागाफी है। जानते हो कि हेवन ली गाड फादर हमको वहां ले जाने लायक बना रहे है। कल्प-2
5000 वर्ष बाद पढाते है। एक भी मनुष्य नही जिनको यह पता हो कि हम ऐक्टर है। गाड फादर के
बच्चे है तो हम दुःखी क्यो हो? आपस मे लड़ते क्यो है? हम आत्मायें तो सब ब्रदर्स है नां। आत्मा
मैली हो गई है। लडाई के मैदान मे मैल ही होते है। देखो तो एक दो मे कैसे लडते रहते है। इन जैसा
खोफनाक कोई होगा? सारे शहर पर बाम्बस फटेगें और खत्म हो जावेंगे। यह आसुरी सम्प्रदाय कितने
खोफनाक है। उनको कहा जाता है असुर। राक्षस। ब्रदर्स आपस मे कैसे लडते रहते है। लड कर ही
सब खत्म हो जावेंगे। यहां हम बाप से वर्सा ले रहे है। ब्रदर्स को आपस मे कब भी लूणपानी नही होना
चाहिये। यहां पर तो बाप से भी लूणपानी होते रहते है। अच्छे-2 बच्चे भी लूणपानी हो जाते है। नाम
सुनो तो हैरान हो जाओ। माया कितनी जबरदस्त है। मास-2 कब बाप को पत्र भी नही लिखते है। तो समझता
हूं कि क्या हो गया बच्चे को क्या वो मर गया? माया ते जीते जीत है माया ते हारे हार है। बाप खुद
कहते है बच्चे दो अक्षर ही सही लिखो तो सही। ऐस भी बहुत है जो बिगर किसीके कहे बिगरपूछे ही एक
दो को याद लिख देते है== ====== === === उसने कहा नही। ऐस ही एक दो का नाम लिखने
की टेव पड़ गई है। जो अच्छे-2 बच्चे है वो बाप को याद तो पक्के है नां। बाप कितना लव करते है
बच्चो से। बाप के पास तो सिवाय बच्चो के और तो कोई है नही जिनको कि याद करें। तुम्हारे लिये तो
बहुत है। तुम्हारी बुधी ईधर उधर जाती है। धन्धे आद मे बुधी जाती है। हमारे लिय तो कोई धन्धा आद
भी नही है। तुम अनेक बच्चो के अनेक धन्धे है। हमारा तो एक ही धन्धा है। हम तो आये ही है बच्चो
को स्वर्ग का वारस बनाने। यह भी तुम्ही बच्चे समझते हो। वो गीता पढने वाले तो कुछ भी नही समझते
है। इनको बाप ने ज्ञान दिया तो भक्ति की गीता एक दम फेंक दी। समझा इनमेतो झूठ है। अभी इनको
हम क्या करेंगे। बेहदके बाप की प्रापर्टी सिर्फ तुम्ही बच्चे हो। गाड फादर है नां। तो सभी आत्माये
इनकी प्रापर्टी है। माया ने छी-2 बना दिया है। अब फिर बाप गुल-गुल बनाने आया है। बाप कहते है
मेरे तो तुम्ही हो। तुमीर पर हमारा मोह भी है। चिठी नही लिखते हो तो बाबा का ओना हो
जाता है। अच्छे-2 बच्चो की चिठी नही आती है तो समझता हूं कि अच्छे-2 बच्चो को भी माया एकदम खत्म
कर देती है। जरूर देहअभिमान है जो बाप को पत्र नही लिखते है। बाबा कहते रहते है बच्चे अपनी खुश
खैरियाफत लिखो। बाबा ऐसी बात पूछते है जो दुनियां मे कोई नही पूछते। बाप पूछते है तुमको कही माया
तो हैरान नही करती है। बहादुर बन कर माया पर जीत पहन रहे हो? तुम युध के मैदान मे हो।
कर्म इन्द्रियां ऐसी वश मे करनी चाहिये जो कुछ भी चंचलता नही हो। सतुयग मे सभी कर्मइन्द्रियां वश
मे रहती है। आंख मुख कीनां कान की नां हाथ की कोई भी चंचलता की बाते वहां नही होती है। कोई भी

गन्दी थी [illegible] होती नही है। यहाँ योगबल से कर्मेन्द्रियों पर [illegible] करते है। बाप कहते है कोई भी गन्दी [illegible]
बात पहले नहीं होती। कर्मेन्द्रियों को वश मे करना है अभी ऐसी पुरुषार्थ करना है। समय बहुत
थोड़ा है। गायन भी है कि बहुत गई थोड़ी रही। नया मकान बनता रहता है। तो यह बुधी मे रखना
है कि बाकी थोड़ा समय है। [illegible] यह तैयार हो जावेगे। यहाँ है हद की बात वो है बेहद की बात।
यह भी तुम बच्चों को समझाया है उनका है साईंस बल तुम्हारा है साईलेन्स बल। है उनका भी बुधी बल।
तुम्हारा भी बुधी बल। साईंस की कितनी इन्वेनशन निकालते रहते है। अभी तो ऐसे-2 बाम्बस
निकालते रहते है कि कहते है कि वहां बैठे ही बाम्बस छोड़ेंगे तो सारा का सारा शहर ही खत्म हो जावेगा।
फिर लश्कर [illegible] आद कुछ भी काम मे नही आवेगा। तो वो है साईंस की बुधी तुम्हारी है साईलेन्स की
बुधी। वो विनाश के लिये निमत बने है। और तुम अविनाशी पद पाने लिये। यह सब समझने की बुधी
चाहिये। देखो बाप कितना सहज रास्ता बताते है। भल कितनी भी अहिल्यायें कुब्जायें हो सिर्फ दो ही अक्षर
याद करना है। बाप और वर्सा। फिर जितना जो याद करें। और संग तोड़ एक बाप को याद करना है।
बाप कहते है मै जब अपने घर मे था तो तुम भक्ति मार्ग मे कितना पुकारते थे। बाबा आप आवेंगे तो हम
सब कुछ कुर्बान करेंगे। बलिहार जावेंगे। यह हुआ जैसे कि कणीगोर। कणीगोर को सब पुराना समान दिया
जाता है। इस समय तुम सब बच्चे कणीगोर हो। बाप लेकर क्या करेंगे। तुम इनको तो नही देते हो नां।
इसने भी सब कुछ दे दिया। यह थोड़ेही यहां बैठ कर महल आद बनावेंगे। यह सब शिव बाबा के
लिये है। उनके ही डायरेक्शन से कर रहे है। वो करनकरावनहार है। बच्चे कहते है बाबा हमारे लिए एक
आप ही हो। आपके लिये तो बहुत बच्चे है। बाबा फिर कहते है हमारे लिये सिर्फ तुम बच्चे हो।
तुम्हारे लिये तो बहुत है, कितने देह के सम्बन्धी की याद रहती है। मीठे-2 बच्चों को बाप कहते
जितना हो सके बाप को याद करो और सबको [illegible] जाओ। स्वर्ग की राजाई का मक्खन तुमको के
मिलता है जरा ख्याल तो करो। कैसे यह खेल की रचना है। तुम सिर्फ बाप को याद करते हो और स्वदर्शन
चक्रधारी बनने पर चक्रवर्ती राजा बनते हो। अभी तुम बच्चे प्रेक्टीकल मे अनुभवी हो। मनुष्य तो समझते
भक्ति परम्परा से चली आती है। विकार भी परमपरा से ह चले आये है। तुम [illegible] राम सीता को
भी बच्चे तो थे नां। और हां बच्चे तो थे नही थे परन्तु उनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। यहां
पर सब है सम्पूर्ण विकारी। एक दो को गालियां देते रहते है। वहां थोड़ेही गालियां। अभी तुम बच्चे
को बाप के श्री-2 के श्री मत मिलती है। तुमको श्रेष्ट बनाते है। अगर बाप का कहना नही मानेंगे तो
फिर थोड़ेही बनेंगे। अब मानो नां मानो सपूत बच्चे तो फौरन मानेंगे। पुरी मदद नही देते है तो
अपने को ही घाटा डालते है। बाप कहते है मै कल्प-2 आता हूं। कितना पुरुषार्थ करवाता हूं। कितन
खुशी से ले आता हूं। तुम फिर से बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हो। इसमे कोई गफलत नही [illegible]
करनी चाहिये। माया बरावेगी जरूर परन्तु उनके घाटे मे नही फसो। माया से ही लड़ाई होती है। बहुत व
[illegible] तूफान आवें उसमे भी बच्चों पर जास्ती माया वार करेगी। रूस्तम से रूस्तम होकर लड़ेगी। जैसे वेद
[illegible] यहां भी [illegible] इनकी याद आने लग
[illegible] बाहर निकल आती है। [illegible]
[illegible] तूफान आवें [illegible] [illegible] फिर आधा
[illegible] वापस जाना है। [illegible] इस देश की
[illegible] बच्चे-2 तुम घर
[illegible] कितना याद [illegible]
[illegible] बिल्कुल [illegible]
[illegible] तो जो मैं
[illegible] तुमको
[illegible]